नोट्स

B.A. Part-III (Hons)
Subject — Geography
Paper – VI (Human Geography)

Unit — IIIrd

Gulam Haider

(1) D **ORAON** B

उराँव जनजाति बिहार के राँची जिले की सर्व प्रमुख जनजाति है। राँची पठार के पश्चिम, उत्तर पश्चिम और मुख्य भाग में, तथा पलामू जिले के लोहरदगा में इनका जमघट है। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश के सुरगुजा जोग और उत्तर प्रदेश के दक्षिण मिर्जापुर में भी इनका उल्लेखनीय विस्तार है। अब तो बंगाल उत्तरी बिहार एवं असम में भी इनकी छिट-पुट बस्तियाँ पायी जाती हैं। मजदूरी करने के लिए ये आजकल समस्त बिहार के प्राय सभी भागों में फैले हुए हैं। आसाम के चाय बगानों में मजदूरी करने के लिए ये अधिक संख्या में बस गये हैं उनकी जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। — 1911 — 835994
1931 — 1021355
1978 — 2022500

उत्तरी बिहार में ये कृषक मजदूरों के रूप में फैले हुए हैं जहाँ उनको "धागड़" कहा जाता है। धागड़ शब्द का अर्थ उराँव भाषा में "भुवा" होता है जो दूसरों के लिए श्रम करे?

उत्पत्ति :→ प्रो० डाल्टेन के अनुसार उराँव का उत्पत्ति स्थान कोंकण क्षेत्र है। ग्रीयर्सन के अनुसार उराँव की उत्पत्ति 'उरान' (Uran) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'अतिव्ययी' (खर्चीला)। उराँव लोग बहुत खर्चीले होते हैं। डॉ० हान का कहना है कि उराँव शब्द कुरुख भाषा के ओरे गोड़ा शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है बाजपंछी (Hawk)

शारीरिक रचना :→ उराँव लोग काले, भूरे या बिल्कुल काले होते हैं। बाल रूखे या गहरे काले होते हैं। इनकी ठुड्डी और दाँत आगे की ओर निकले अटपटे और छोटे होते हैं, होंठ मोटा, सिर लम्बा, ललाट थोड़ा दबा हुआ और पतला, नाक चौड़ी और चिपटी, आँखें भारी और चमकीली होती हैं। ये हट्ठे कट्ठे मेहनती होते हैं।

सामाजिक जीवन

उपजातियाँ :⟶ उराँव लोग कई उपजातियों में बटे हैं —

(1) हन्ना :— ये लोग होंठ या जीभ से आग और लोहा नहीं छुआते
(2) किस्पोट्टा :— ये सुअर की अतड़िया नहीं खाते
(3) लकड़ा :— ये बाघ का माँस नहीं खाते
(4) कुजूर :— ये जंगली कुत्ता नहीं मारते
(5) तिग्गा :— ये जंगली कुछ नहीं खाते
(6) टिक्की :— ये छोटे चूहे को नहीं मारते
(7) उरगोड़ा :— ये बाज नहीं मारते
(8) लोधो :— ये कठखोलवा को नहीं मारते

उपर्युक्त जनजातियों के नाम जानवरों साड़ो, पौधों या अन्य वस्तुओं के नाम पर रखे गये हैं।

भोजन :→

वस्त्र :→ वस्त्र में धोती-चादर एवं अंगोछे का इस्तेमाल करते हैं। घुटने तक ही धोती पहनते हैं कपड़े की कमी के कारण ये जाड़े की ऋतु में भी कपड़े की बड़ी कंजूसी व्यवहार करते हैं। स्त्री-पुरुष दोनों गहने पहनने के शौकीन होते हैं, लड़किया साड़ी और ब्लाउज पहनती हैं। परन्तु बूढ़ी औरते केवल साड़ी ही लपेटे रहती हैं। लड़किया गले में मूंगों की माला, हाथ में लहठी एवं चुड़िया और बाह में पीतल के भारी बाजू पहनती हैं। उनके कानों में भारी बालियाँ और कौड़िया भी लटकी रहती हैं। युवा पुरुष सूती या रेशमी धागों की ऐंठी हुई करधनी पहनते हैं, जिसमें चाभीयों के गुच्छे जैसे रखने की जाली और खैनी के बटुआ आदि लटकते हैं।

आवास :— उराँव लोग अन्य बड़ी जातियों की तरह ये स्थाई रूप से अपने माँ-बाप दादा के घरों में रहते हैं अपने जन्म भूमि को ये प्राय: नहीं छोड़ते हैं मजदूरी करने के लिए ये दूर जगह के स्थानों में जाते हैं परन्तु काम खत्म होते ही पुन: अपने गाँव को लौट आते हैं। इनके घर प्राय: मिट्टी के ही होते हैं। आंगन बड़ा होता है, घर के चारों ओर पेड़ पौधे लगे होते हैं। प्राय: हर गाँव में एक मुखिया होता है, जो गाँव के छोटे२ झगड़ों के निबटारा इसी द्वारा होता है।

Scanned with CamScanner

विवाह प्रथा :→ मुंडा लोग की तरह उराँव जाति अन्तर्विवाही होते हैं। ये लोग दूसरी जनजातियों में विवाह नहीं करते, परन्तु स्वतः ये बहिर्विवाही होते हैं। एक जाति का युवक दूसरी उपजाति की के साथ ही विवाह करेगा।

youth organization :→ उराँव लोगों में धुमकुड़िया अथवा जोकेरपा की प्रथा बहुत ही प्रचलित है। धुमकुड़िया एक प्रकार प्रशिक्षण केन्द्र है। जहाँ एक पुरुष या औरत को उनकी जिन्दगी में काम आने वाली प्रायः सभी चीजों की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। धुमकुड़िया एक निश्चित किया हुआ स्थान होता है जहाँ युवकों का सामूहिक निवास रात्रि में होता है। इसी प्रकार रात्रि निवास स्थान लड़कियों के लिए अलग होता है। ऐसी जगह की अनुपस्थिति में युवतियों को गाँव की विधवा औरतों या बुढ़ियों पर बाँट दिया जाता है। इस धुमकुड़िया में युवक और युवतियाँ प्रौढ़ता के प्रायः सभी गुणों जैसे पारिवारिक और सामाजिक परम्पराओं, आर्थिक उत्पादन, सामाजिक धार्मिक संगठनों आदि के लिए उत्तरदायी बातों की शिक्षा प्राप्त करते हैं।

आर्थिक प्रथाएँ

उराँव लोग अधिकांशतः खेतिहर होते हैं धान उनका सबसे प्रिय अन्न है। धान से शराब बनाते हैं। मकई, कोदो, उड़द, अरहर, कुलथी, मडुआ आदि की भी खेती करते हैं। ये बड़ी मेहनती होते हैं ढालों पर सीढ़ीदार खेती बनाना सिंचाई खर-पतवार की निकौनी, सोहनी, दौवनी आदि में ये अब काफी निपुण हो गये हैं। विभिन्न कृषि कार्यों के पहले ये विभिन्न प्रकार के पूजा पाठ भी करते हैं। ये चावल, दाल, साग-सब्जी और मांस-मछली भी अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार व्यवहार में लाते हैं। ये प्रायः बैल, भैंस, मुर्गियाँ, बकरियाँ आदि पालते हैं। आखेट करना, मछली मारना, जंगलों से लकड़ी काटना गोंद और अन्य चीजें इकट्ठा करना परम्परागत कार्य है। औरतें चरखे पर सूत काटना, कपड़े और चटाईयाँ बुनना, खादी बनाना आदि जानती हैं। पुरुष रस्से, पगहे, हल बनाने, घर उठाने, शिकार करने एवं मछली मारने में दक्ष होते हैं।

आधुनिक परिवर्तन

मुंडा लोगों की तरह उराँव लोग भी आधुनिक परिवर्तन से प्रभावित हैं। हिन्दू धर्म रीति-रिवाज और हिन्दू परम्पराओं से ये पूर्णतः सम्बंधित हैं। परन्तु लाखों उराँव ने अब ईसाई धर्म मान लिया है। इनके रहन-सहन खेती बाड़ी आवास आदि तेजी से आधुनिक होती जा रही है। जनजातिय परम्पराएं अंधविश्वास भूत-पूजा आदि से छूट रही हैं। लाखों युवक अब शिक्षित अच्छे रोजगार में एवं समाज सेवा में हाथ बटाने लगे हैं। राजनीति में भी उनका अधिकार बढ़ गया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उराँव धीरे-धीरे गायब हो रहे हैं और ये प्राचीनता को छोड़कर आधुनिक की ओर धीरे: धीरे: बढ़ रहे हैं। कनाडा के दक्षिण तथा अलास्का के दक्षिण U.S.A. तथा कनाडा की सभ्य जातियों के सम्पर्क में आने के कारण इनमें नई सभ्यता का विकास हुआ है। ये लोग अब शिक्षित हो रहे हैं और नई तकनीकी का विकास कर रहे हैं और अपना जीवन को उन्नत बनाने में लगे हैं। परन्तु इस तरह का परिवर्तन केवल टुन्ड्रा प्रदेश के सीमान्त क्षेत्र में देखने को मिलता है बाकी उत्तरी भाग में ध्रुवों पर इनकी स्थिति यथावत बनी हुई है। उन भागों में वे उसी प्रकार जीवन बिता रहे हैं।